अभ्यास पत्रक

पाठ – पद

नाम :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

प्रश्न 1: काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) (1×5 = 5 अंक)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।

1. गोपियाँ उद्धव को "अति बड़भागी" क्यों कहती हैं?
   (क) वे श्रीकृष्ण के मित्र हैं (ख) वे योगी हैं
   (ग) वे श्रीकृष्ण के प्रेम से अछूते हैं (घ) वे मथुरा में रहते हैं
2. "अपरस रहत सनेह तगा तैं" पंक्ति का आशय है –
   (क) उद्धव ने स्नेह को छुआ ही नहीं (ख) उद्धव ने प्रेम को त्याग दिया
   (ग) उद्धव ने स्नेह किया लेकिन कम (घ) उद्धव ने गोपियों से स्नेह किया
3. "पुरइनि पात" का अर्थ है –
   (क) बेल का पत्ता (ख) आम का पत्ता (ग) तुलसी का पत्ता (घ) कमल का पत्ता
4. किस प्रतीक के माध्यम से गोपियाँ उद्धव की विरक्ति दर्शाती हैं?
   (क) चींटी और गुड़ (ख) कमल-पत्र और तेल की गागर (ग) कृष्ण की बंसी (घ) यमुना जल
5. "गोपियाँ किस स्थिति को दुर्भाग्यपूर्ण मानती हैं?"
   (क) उद्धव का योग पथ पर चलना (ख) श्रीकृष्ण का मथुरा में रहना
   (ग) स्वयं का प्रेम में उलझना (घ) उद्धव का गोपियों से बात न करना

प्रश्न 2: दो रिक्त स्थान भरें – (1×2 = 2 अंक)

1. गोपियों ने उद्धव की तुलना _____ और _____ से की है।
2. सूरदास के अनुसार गोपियों के मन में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम की स्थिति _____ पक्षी की लकड़ी जैसी है।

प्रश्न 3: लघु उत्तरीय प्रश्न (उत्तर सीमा – 30 शब्द) (कुल 4 में से कोई 3 करें) – (3×2 = 6 अंक)

1. "हरि हैं राजनीति पढ़ि आए" – इस पंक्ति के माध्यम से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं?

उत्तर - .....
.....
.....
.....

2. गोपियाँ 'जोग-संदेश' को क्यों अस्वीकार कर देती हैं?

उत्तर - .....
.....
.....
.....

3. "मन की मन ही माँझ रही" – इस भाव में कौन-सी पीड़ा प्रकट की गई है?

उत्तर - .....

egyanarchive

……
……
……

4. 'राजधर्म' की व्याख्या गोपियों ने किस सन्दर्भ में की है?

उत्तर - ……
……
……
……

प्रश्न 4: निम्नलिखित पंक्तियों का सप्रसंग व्याख्या करें – (कोई एक) – (1×4 = 4 अंक)

(क) *हमारैं हरि हारिल की लकरी।*
मन क्रम बचन नंद – नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।

(ख) *अब इन जोग सँदेसनि सुनि – सुनि, बिरहिनि बिरह दही।*
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।

उत्तर - ……
……
……
……
……
……
……
……
……

प्रश्न 5: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (1×8 = 8 अंक) *उत्तर सीमा – 80–100 शब्द*

प्रश्न: सूरदास के 'भ्रमरगीत' में गोपियों द्वारा उद्धव को दिए गए उत्तरों से उनके चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभर कर सामने आती हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - ……
……
……
……
……
……
……
……
……
……
……
……

egyanarchive

उत्तर कुंजी (Answer Key)

प्रश्न 1 – MCQ उत्तर:

1. (ग) वे श्रीकृष्ण के प्रेम से अछूते हैं
2. (क) उद्धव ने स्नेह को छुआ ही नहीं
3. (घ) कमल का पत्ता
4. (ख) कमल-पत्र और तेल की गागर
5. (ग) स्वयं का प्रेम में उलझना

प्रश्न 2 – रिक्त स्थान:

1. कमल के पत्ते, तेल की गागर
2. हारिल

प्रश्न 3 – लघु उत्तर:

1. गोपियाँ व्यंग्य से कहती हैं कि श्रीकृष्ण अब चतुर हो गए हैं और राजनीति पढ़कर गोपियों से सीधा संवाद नहीं करते।
2. क्योंकि गोपियों का प्रेम सांसारिक नहीं है, वे योग के वियोगी रास्ते को अस्वीकार करती हैं।
3. यह भाव दर्शाता है कि गोपियाँ अपने प्रेम को कभी व्यक्त नहीं कर सकीं और अब उनका आशा का आधार भी टूट गया है।
4. गोपियाँ कृष्ण को याद दिलाती हैं कि राजा को प्रजा को नहीं सताना चाहिए – यह उनका राजधर्म है।

प्रश्न 4 – व्याख्या (उत्तर संक्षेप में):

(क)

गोपियाँ कहती हैं कि उन्होंने श्रीकृष्ण को मन, वचन और कर्म से पूरी दृढ़ता से हृदय में बसा रखा है। जैसे हारिल पक्षी लकड़ी को मजबूती से पकड़े रहता है, वैसे ही वे कृष्ण से जुड़ी हुई हैं।

(ख)

गोपियाँ कहती हैं कि योग-संदेश सुन-सुनकर वे विरह की आग में जल रही हैं। वे जहाँ सहारा चाहती हैं, वहाँ से उन्हें और अधिक पीड़ा मिल रही है, जिससे वे टूट चुकी हैं।

प्रश्न 5 – दीर्घ उत्तर का संकेत रूपरेखा:

- गोपियाँ निष्ठावान, प्रेममयी व एकनिष्ठ भक्त हैं।
- वे उद्धव की योग-साधना को अस्वीकार करती हैं।
- श्रीकृष्ण के प्रति उनका प्रेम भौतिक नहीं, आत्मिक है।
- व्यंग्य और तर्क से वे अपनी पीड़ा और समर्पण दोनों प्रकट करती हैं।
- वे श्रीकृष्ण को राजधर्म की याद दिलाती हैं – इससे उनकी साहसी व आत्मसम्मानी प्रवृत्ति उजागर होती है।
- सूरदास ने गोपियों के माध्यम से भक्ति, लोक-चेतना और नारी-भावना को सशक्त रूप में चित्रित किया है।

egyanarchive